

# जैन दर्शन

पत्र संख्या - DSCC - 13

पाठ्यक्रम विवरणम् -

आप्तस्वरूपविमर्शः

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- आप्तस्य निरुक्तिः, श्रेयोमार्गसंसिद्धिः तन्निदर्शकश्च आप्तः, श्रेयोमार्गप्रणेतृत्वं कर्मभूम्भृद्भेदतृत्वं विश्वतत्त्वज्ञातृत्वं चाप्तगुणाः। जैनागमग्रन्थानां मूलकर्ता, तदुत्तरकर्तारो वा, एतेषां सन्निर्णयेण आप्तत्वविचारः।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- तीर्थप्रवर्तकाः आप्ताः, जैनशास्त्रदिशा कस्य आप्तत्व, सर्वेषां तीर्थकृतामाप्तताभावः, अनुमानप्रयोगतः तत्सिद्धिः, ईश्वरसिद्धेरभाव ततश्च तस्य जगत्कर्तृत्वनिरासः। र्थप्रवर्तकाः आप्ताः, जैनशास्त्रदिशा कस्य आप्तत्व, सर्वेषां तीर्थकृतामाप्तताभावः, अनुमानप्रयोगतः तत्सिद्धिः, ईश्वरसिद्धेरभाव ततश्च तस्य जगत्कर्तृत्वनिरासः।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- आप्तस्य वीतरागता सर्वज्ञता हितोपदेशिता च । आप्तेषु दोषावरणयोर्हानिः अपरिहार्या, दोषाभावात् वीतरागत्वम्, आवरणक्षयाच्च सर्वज्ञत्वम् । सामान्यतो विशेषतो वा सर्वज्ञसिद्धिः।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- आप्तत्वनिर्णये लाभः, हितोपदेशः यथार्थोपदेशो वा तस्यार्थावबोधनम्, समाजहितसंरक्षणे यथार्थोपदेशस्य सार्थकता, कुरीतिपरित्यागः धर्ममार्गानुशरणञ्च, मोक्षमार्गावलम्बनात् च श्रेयसः सिद्धिः ।

---

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - आप्तपरीक्षा (आ. विद्यानन्दिः) वीरसेवा मन्दिर, नई दिल्ली

---

**सहायकग्रन्थाः -**

- \* आत्ममीमांसा तत्त्वदीपिका (डॉ. उदयचन्द्र जैन) श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, काशी
- \* न्यायदीपिका (अभिनवधर्मभूषणयतिः) वीरसेवा मन्दिर, नई दिल्ली
- \* षड्दर्शनसमुच्चयः, चतुर्थाध्यायान्तर्गतः (आ.हरिभद्रसूरिः) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- \* आत्मपरीक्षा (संपा. प्रो. वीरसागर जैन) अखिल भारतीय दिग. जैन विद्वत्परिषद्, जयपुर

# जैन दर्शन

पत्र संख्या - DSCC - 14

पाठ्यक्रम विवरणम् -

सृष्टितत्त्वदर्शनम्

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- सृष्टेरवधारणा, अकृत्रिमो लोकः, सृष्टौ परमाणुः सूक्ष्मस्थूलसृष्टिः, पुद्गलस्कन्धस्वरूपा, जीवानां संसरणं सृष्टिः तद्हेतुश्च, जीवानां बन्धप्रक्रियायां कर्मसृष्टिः, जीवानां भवान्तरेषु गतिः।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- विद्याऽविद्ययोः स्वरूपम्, अविद्याप्रभावपरित्यागः, तत्त्वज्ञानम्, जीवाऽजीवतत्त्वानि, | जीवाजीवपदार्थेषु मूर्त्ताऽमूर्त्तत्वम्, पुण्यपापतत्त्वद्वयम्, मन्दतीव्रकषायपरिणामाः, आस्रवतत्त्वं कर्मागमहेतुः, योगस्य बन्धहेतुत्वम्, आस्रवद्वारनिरोधकभावाः संवरतत्त्वम्, ज्ञानाऽज्ञानिनो वा निर्जराभेदः, मोहाभावे मोक्षप्राप्तिः

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- तत्त्वदर्शनस्य फलं मुक्तिः, मुक्तजीवः, मुक्तियुक्तविशेषः निर्वाणलाभः कस्य, मुक्तजीवानाम् ऊर्ध्वगतिः, सिद्धजीवाश्च ।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- सामाजिकेषु सृष्टितत्त्वपरिज्ञानेन को लाभः, वैज्ञानिकपरम्परया सह तत्संगति समीक्षणञ्च।

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - समणसुत्तं सृष्टितत्त्वसूत्राणि, समाख्यातिटीकोपेतम् (प्रो.एस.के. सिंघई)

प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संस्थान, लाडनूँ

सहायकग्रन्थाः -

- \* जैनतत्त्वविद्या (मुनि प्रमाणसागर) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- \* जैनदर्शन और विज्ञान (प्रो. एम. आर. गेलड़ा) जैनविश्व भारती, लाडनूँ
- \* जैनदर्शन मनन और मीमांसा (आचार्य महाप्रज्ञ) आदर्श साहित्य संघ, चूरू
- \* विश्वप्रहेलिका (मुनि महेन्द्रकुमार) जैनविश्व भारती, लाडनूँ

# जैन दर्शन

पत्र संख्या - DSCC - 15

पाठ्यक्रम विवरणम् -

जैनागमपरिचयः

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- आगमस्य अवधारणा, आगमस्य मूलस्रोतांसि, आगमोपदेशारो गणधराः, तत्संरक्षकाः श्रुतकेवलिनः, श्रुतधराचार्याः प्रमुखा ऋषयः, अंगपूर्वधारिणां महर्षिणां कालक्रमेण यशोगानम्।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- द्वादशांगश्रुतम्—आचारसूत्रकृतस्थानसमवायव्याख्याप्रज्ञप्तिज्ञातृधर्म- कथोपासकाध्ययना न्तकृद्दशानुत्तरौपपादिकदशप्रश्नव्याकरणविपाकसूत्रदृष्टिवादांगानां परिचयः।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- श्रुतसंरक्षणार्थं वाचनाः युगप्रतिक्रमणादयः परम्परारम्भः दिगम्बरश्चेताम्बर विभागानुक्रमेण तत्परिज्ञानम्।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- श्वेताम्बरसम्प्रदाये पंचचत्वारिंशत मूलप्राकृतागमग्रन्थाः दिगम्बरसम्प्रदाये समुपलब्धौ मूलप्राकृतागमग्रन्थौ छक्खंडागमसुत्तं पेज्जदोसपाहुडं (कषायपाहुडं) चा आगमप्रतिष्ठया सम्मानिताः प्रमुखाः प्राकृतसंस्कृतग्रन्थाः ।

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान (डॉ. हीरालाल जैन) राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर प्राकृत साहित्य का इतिहास (जगदीश चन्द्र जैन) चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी

सहायकग्रन्थाः -

- \* तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, (नेमीचन्द्र शास्त्री) भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्
- \* जैन धर्म का मौलिक इतिहास (आचार्यहस्तीमल) मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन

---

समिति, जोधपुर

- \* जैनदर्शन मनन और मीमांसा (आचार्यमहाप्रज्ञ) आदर्श साहित्य संघ, चूरू
- \* जैन आगम (प्रो. एम. आर. गेलड़ा) जैनविश्व भारती, लाडनूँ
- \* जैन आगम मीमांसा (देवेन्द्र मुनि शास्त्री) मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति, जोधपुर